International Journal of Education and Science Research Review
ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org February- 2016, Volume-3, Issue-1 Email- editor@ijesrr.org

संगीत का सामाजिक जीवन में महत्व

डा0 गीता शर्मा
प्रवक्ता संगीत विभाग
आई0एन0पी0जी0 कॉलेज मेरठ।

व्यापक दृष्टि से देखने पर संगीत सम्पूर्ण वि"व में दिखाई देता है, सम्पूर्ण सृष्टि में संगीत व्याप्त है। संगीत जीवन और जगत के गत्यात्मक सौन्दर्य की भावात्मक अभिव्यक्ति है। जीवन के गतिमय सौन्दर्य की भावात्मक अभिव्यक्ति होने के कारण संगीत एक ओर जीवन की सभी अनुभूतियों और आका"ाओ की अभिव्यक्ति करता है तो दूसरी ओर समाज के सारे ग्रंथ उसमें प्रतिबिम्ब दिखाई देते हैं। समाज कड़ियों से बना है और संगीत उन्हीं व्यक्तियों की सृष्टि है। यहीं एक कला में कल्याण की भावना सन्निहित है। कल्याण किसका होगा? समाज का और उस व्यक्ति का जिससे मिलकर यह संसार बना है।

संगीत ललित कलाओं में से एक सबसे अधिक सबल कला है जो कम से कम उन प्रसाधनों से युक्त अधिक से अधिक अभिव्यक्ति करने में समर्थ है। कलाकार यह अभिव्यक्ति समाज में ही करता है। कलाकार की कोई भी अभिव्यक्ति चित्र या संगीत का कोई भी रूप धारण करने से पूर्व कलाकार की भावना का रूप धारण करता है। उसकी चेतना से चेतना, उसके प्राणों से जीवन का वरदान, उसकी वेदना से तीव्रता, उसकी आन्तरिक दीप्ती से प्रका"ा ग्रहण करता है। प्र"न यह है कि कलाकार में मानवता, वेदना, चेतना सबका मिश्रण जो स्वरों को उसके कंठ से प्रस्फुटित होने के लिये बाध्य करता है। कहाँ स प्राप्त होता है? उसके अन्तर में जो एक रागात्मक तत्व है, जो उसे कुछ सृजन करने के लिये बाध्य करता है, उस सृजन का रूप समाज ही उसे प्रदान करता है। कलाकार को समाज से प्राप्त ''सुन्दर'' को भी अपने अथक मनोबद द्वारा कठिन मानसिक परिश्रम से सुन्दर रूप प्रदान करके अपने सौन्दर्य द्वारा हमें सुख सरिता में बहा ले जाता है। संगीत के सामाजिक पक्ष के बारे में जब हम विचार करना आरम्भ करते है तो हमारे समक्ष दो इकाइयाँ आती है:

प्रथम– संगीत का जो समाज में संगीत की स्थापना करता ह।
द्वितीय– समाज के व्यक्तियों का समूह है जिसका लक्ष्य जीवन को सहज भाव से समन्वित रूप से चलाना है।

संगीत, चित्रमूर्ति और काव्य के माध्यमों से जिन भावों की अभिव्यक्ति करते है वे सभी भाव नवरसों के अंतगत आते हैं। जीवन के इन रसों की अनुभूति मनुष्य समाज में ही करता है। ई"वर प्रद्त धीमी सहज अनुभूतियाँ व्यक्ति को प्राप्त हैं। उनका विकास समाज में ही मिलता है तभी ''कविवदन्त'' ने लिखा है–

''वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान''

लगभग इसी भाव को अंग्रजी कवि ''शैले'' ने भी निम्न पंक्तियों में कहा है–

"Our sweetest songs are those, that tell of sadness thoughts."

प्रत्येक कलाकार चाहे वह संगीत का सृजन करे या अन्य किसी कला का समाज ही उसके लिये प्रेरणा का स्त्रोत है। यही कारण है कि युग परिवर्तन के साथ–साथ कला का रूप भी परिवर्तित होता चला आ रहा है। संगीत का जैसा आध्यात्मिक रूप हम वैदिक काल में पाते है जो आज विस्मृत हो गया है। कलाकार समाज में पारिवारिक, सामाजिक, प्रान्तिय एवं राष्ट्रीय वातावरण से घिरा है। उसकी क्रिया, प्रतिक्रिया का परिमान ही उसका क्रतित्व होता है। संगीत के वैदिक काल में आज तक के रूप का अवलोकन करने पर हम देखते हैं कि वैदिक काल में जिस प्राण व गति को उदगीत कहा गया है उसका रूप निर्गीत, बहीगीति तदुपरान्त हुआ इन तीनों श्रेणियों में विभक्त संगीत स्थाई न रह सका और दो श्रेणियों में विभक्त हो गया–

01. दे"ाी संगीत 02. मार्गी संगीत

इसके बाद भी परिवर्तन की श्रंखला चलती रही और संगीत के क्षेत्र में संगीत की जो विधायें है वे इस प्रकार हैं– शास्त्रीय संगीत, सहज संगीत और लोक संगीत के विविध रूप में त्रिवेणी की अलग–अलग धाराओं की तरह प्रवाहित हो रहे हैं। यह परिवर्तन समाज के बदलते रूप द्योतक है और यह भी स्पष्ट करता है कि कला और समाज दोनों ही एक होकर आगे बढ़े हैं।वैदिक काल में सामवेद के मंत्रों से संगीत निस्सृत होकर आज हमारे सामने विभिन्न रूपों में व्यक्त हो रहा है।

भारत के समस्त पर्व, त्यौहारों और सोलह संस्कारों में संगीत भारतीय संस्कृति का अनिवार्य अंग बन गया है जो जीवन में संगीत के महत्व को द"ार्ाता है। ''वस्तुतः यह जीवन का सक्ष्म आहार पानी है। इसी से जीवन का पूर्ण विकास होता है और संगीत साधक आध्यात्म पक्ष के सहारे शरीर, इन्द्रीय और मन से ऊपर आत्मतत्व को प्राप्त करता है।''**1**

भारतीय संगीत ने जीवन में सदैव उच्च आद"ार्ा का दृष्टिकोण रखकर जीवन के विकास का मार्ग प्र"ास्त किया है। मानवता, प्रेम आपसी सद्भाव का विकास करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डॉ॰ महावीर प्रसाद 'मुके"ा' जीवन में संगीत की महत्ता को प्रतिपादित करते हुये लिखते हैं ''गाँधी जी जैसे संत जीवन को संगीतमय बनाने का अर्थ उसे ई"वर के साथ एकरस बनाना समझते हैं और मनुष्य की पा"विक वृत्तियों के शमन और शोध के लिये जीवन में संगीत की आव"यकता को अनिवार्य बताते हैं।**2**

समाज कला का घटक है प्रत्येक कला चाहे संगीत हो या साहित्य सब में एक ही प्राण शक्ति होती है। जिस प्रकार शरीर एक है, उसके अवयव एक हैं पर सभी महत्वपूर्ण हैं और एक ही प्राण शक्ति से संचारित हैं और उसका आस्वादन भी मनुष्य एक ही शरीर के विभिन्न अंगों से करता है– जैसे चक्षुओं से देखकर, कर्णन्द्रियों से सुनकर, त्वचा से स्प"ा द्वारा, नासिका से सुगन्ध द्वारा जिव्हया से स्वाद द्वारा करते हैं। प्रत्येक कला का सृजन एक ही राग तत्व से होता है, माध्यम अनेक हो सकते हैं, कलाकार के अंतर में तंरगों का उव्हेलन समान ही है। समाज जैसे घटक कलाकार के लिये बनायेगा व उसी रूप में अपनी कला का प्रस्तुतिकरण करेगा।

संगीत का मानव जीवन में अत्यन्त महत्व है। आजादी की लड़ाई में राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत गीत गा गाकर परतंत्र भारत को स्वतंत्र कराने में वंदे मात्रम जैसे गीतों को कौन नकार सकता है। उमे"ा जो"ाी प्रसिद्ध संगीतज्ञा लक्खी बाई की जीवनी का वर्णन करते हुये लिखते हैं ''भारतीय संगीत न आज़ादी की लड़ाई में वि"ोष भूमिका अदा की। श्रीमति लक्खी ने संगीत के माध्यम से आज़ादी की लड़ाई को आगे बढ़ाया। लक्खी पहली संगीतज्ञा थी जिसने संगीत का खूबसूरत चोगा दे"ाभक्ति को पहनाया।''**3**संगीत की सार्वभौमिकता आज स्वीकार्य जाने लगी है क्योंकि संगीत हमारी भावनाओं से सम्बन्धित है। सम्पूर्ण वि"व में मानव के सुख–दुखों की भावनायें एक समान हुआ करती है। वि"व के प्रत्येक मानव का हँसना, रोना इत्यादि भावों को समझने के लिये हमें उस दे"ा की भाषा का ज्ञान होना आव"यक नहीं है। आज संगीत को इसलिये वि"व भाषा कहा जाने लगा है। वि"व बन्धुत्व की भावना ज्ञाग्रत करने में संगीत का प्रयोग वि"व भाषा बनकर किया जा सकता है। इस प्रकार संगीत हमारे जीवन में ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना साकार कर सकता है। डॉ॰ अरुण कुमार सैन इस सम्बन्ध में कहते ह ''सम्पूर्ण मानवता के हित में जो ग्राह्य हो उन तत्वों के आधार पर आज के युग की सबसे बड़ी माँग बहुजन हिताय कृतियों की है ताकि वसुधैव कुटुम्बकम की कल्पना अधिकाधिक सार्थक हो सके ऐसी स्थिति में वि"व संगीत की कल्पना एवं भावी संगीत पीढ़ियों के लिये ऐसी संगीत रचनाओं के सृजन की दि"ाा जो द"ा, काल एवं सीमित मनोवृत्तियों से परे हो आज के संगीतज्ञनों का कर्तव्य है।''**4**

संगीत एक कला है, कलाओं के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करते हुये आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं ''कला का कार्य व्यक्ति और समाज को परस्पर समीप लाना है, इसी कार्य के लिये संसार में भाषाओं की उत्पत्ति हुई जिनमें से कला भी एक है।''**5** अतः निःसंदेह वि"व भाषा के रूप में संगीत का हमारे जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान दिखाई देता है, संगीत कला का मानवीय गुणों की वृद्धि में अमूल्य योगदान प्रतीत होता है। प्रसिद्ध संगीतज्ञ ''पं॰ भीमसेन जो"ाी'' संगीत को राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण उपादान के रूप में देखते हैं। भारतीय दूरद"ान पर राष्ट्रीय एकता से सम्बन्धित गीत ''मिले सुर मेरा तुम्हारा'' के गायक पं॰ भीमसेन जो"ाी अपने विचार व्यक्त करते हुये कहते हैं ''भिन्नता के इस वातावरण में अभिन्नता का सुर भरने के लिये हमारी सरकार ने संगीत जैसी सर्वजनीन भाषा के माध्यम से इस गीत के प्रसारण का कायक्रम बनाया है क्योंकि संगीत ही अब एक ऐसा स"ाक्त और सर्वभौमिक साधन बचता है जो लोगों को एक सूत्र में पिरो सके।'' वास्तव में हम दैनिक जीवन में यह अनुभव करते हैं कि जब सभी धर्म सम्प्रदाय के लोग एक साथ मिल बैठकर गायन–वादन करते या सुनते हैं, तो उनमें कहीं कोई विरोधाभास दिखाई नहीं पड़ता, सब एक ही रंग में रंगे दिखाई देते है और वि"ाुद्ध आन्नद की पावन धारा चारों ओर प्रवाहित होती प्रतीत होती हैं। संगीत के महत्व को सभी विद्धानों ने अलग–अलग दृष्टिकोण से देखकर शब्दों में व्यक्त करने का पयास किया है। डॉ॰ महावीर प्रसाद ''मुके"ा'' के अनुसार ''जहाँ कलाओं से अलौकिक आन्नद की प्राप्ति होती है वहाँ वे मानव की प"ाु भावनाओं का संस्कार परिष्कार करके उसे सभ्य, सु"ाील भी बनाती हैं।

प्रसिद्ध संगीत चिन्तक ''के॰ वासुदेव शास्त्री'' हिन्दु धर्म में स्वीकारे गये चार पुरूषार्थ की सिद्धि संगीत द्वारा मानते हुये कहते हैं ''संगीत रूपी एकमात्र साधन से धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष चारों पुरुषार्थ मिलते हैं। भगवद् भजन से धर्म, राजाओं और प्रभुओं से मिले हुये सम्मान के रूप में अर्थ, अर्थ से काम और ई"वर प्रसाद के फलस्वरूप मोक्ष की

प्राप्ति होती है।''**6** उपर्युक्त दृष्टांत हमारे जीवन के चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति में संगीत किस प्रकार सहायक हो सकता है इसका विवेचन ''के॰ वासुदेव शास्त्री'' ने सुन्दर ढंग से किया है। यूनानी सभ्यता में संगीत के महत्व को स्वीकारा गया है, यूनानी सभ्यता मे संगीत के महत्व का वर्णन करते हुये ''हर्बट ए॰ पोपले'' कहते हैं–

"The ancient Greeks are said to have made a point of teaching their children music, because they believed that it made them more unselfish and helped them to see better the beauty of order and the usefullness of the rule".**7**

उपर्युक्त दृष्टांत के आधार पर कहा जा सकता है कि संगीत के जीवन में महत्व को सभी दे"ाों में स्वीकारा गया है। रोम के निवासियों का संगीत की महत्ता का विचार प्रस्तुत दृष्टांत से प्रकट होता है। संगीत द्वारा मानव के भावनात्मक विकास क सम्बन्ध में वर्णन करते हुये भगवत शरण शर्मा कहते हैं ''कलाओं द्वारा व्यक्ति भावुक बन जाता है और विद्या द्वारा तार्किक समाज का अहित भावुक व्यक्तियों द्वारा कभी नहीं हो सकता। इतिहास को देखने से विदित होगा की रक्तपात उन्हीं शासकों और राजाओं द्वारा अधिक हुआ जो की संगीत या अन्य कलाओं से दूर रहते हैं। समुद्रगुप्त के काल में सिक्के पर भी वीणावादन के चित्र प्राप्त होते हैं इसीलिये उस काम को स्वर्ण युग कहा जाता है।''**8** प्रस्तुत दृष्टांत जीवन में संगीत के महत्व को प्रकट करता है और यह प्रमाणित करता है कि जीवन में संगीत का अत्याधिक महत्व है। प्रायः दैनिक जीवन में हम यह अनुभवन करते है कि जब तक हमारे जीवन में संगीत की स्वर लहरियाँ गूँज रही हैं, नि"चत रूप से उस क्षण हमारा जीवन सुखमय है, क्योंकि यदो हम दुखी है तो संगीत सुन ही नहीं सकते अतः ई"वर से मेरी यह प्रार्थना है कि प्रत्येक घर में संगीत की स्वर लहरियाँ गूँजती रहें, जिस घर में बिना किसी उचित कारण के संगीत नहीं गूँज रहा है वहाँ मूल में हम दुख ही पायेगें, यह नि"चत है।

रामायणकाल के जीवन में संगीत के महत्व का वर्णन करते हुये उमे"ा जो"ाी लिखते हैं ''लोंगों के जीवन में सागर के समान अथाह गहराई आती जा रही थी और यह सब दैविय संगीत की अटूट साधना का प्रतिफल था, प्रत्येक आदमी सुख शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा था। संगीत ने लोगों की रूचियों को उनके स्वभावों को परिष्कृत बना दिया था, पारिवारिक जीवन में प्रेम की निमल धारा बह रही थी, इस काल में शायद ही कोई ऐसा घर हो जिसमें संगीत का अस्तित्व किसी न किसी रूप में न हो। वैदिक काल की ही तरह इस काल में भी हर ग्रह में प्रातः काल होते ही ई"वर आराधना की संगीतमय स्तुति प्रस्फुटित हो उठती थी।''**9** वैदिक और रामायणकाल दानों ही सुखी, सम्पन्न काल माने जाते हैं। संगीत का जीवन में महत्व इन दोनों कालों मे हमें उपर्युक्त उदाहरण से प्रतीत होता ह, आगे उमे"ा जो"ाी रामायणकालोन जीवन में संगीत के सम्बन्ध में पुनः लिखते हैं– ''इस काल के मनुष्यों में जो सौम्यता, जो सुन्दर कल्पना, जो प्रभाव"ााली उमंग एवं जो आनन्दपूर्ण चेतना प्राप्त होती है वह संगीत के विकास के कारण ही है।**10** प्रस्तुत उदाहरण में उमे"ा जो"ाी रामायाणकाल के सामाजिक जीवन में संगीत की महत्ता को स्पष्ट रूप से स्वीकारते हैं।

संगीत के सम्बन्ध में एक अत्यन्त उत्कृष्ट दृष्टांत प्राप्त होता है जिसके अनुसार– ''संगीत के स्वर अणुबम की सुलगती आग को भले न रोक सके पर इस बम छोड़ने वाले पत्थर हृदय को बदल सकते हैं।''**11** संगीत की जीवन में उपयोगिता का यह एक अत्यंत स"ाक्त उदाहरण प्रतीत होता है। संगीत के महत्व को रविन्द्रनाथ टैगोर ने समझा था। उन्होंने उनके द्वारा स्थापित ि"ाक्षा संस्थानों में संगीत को पर्याप्त महत्व प्रदान किया तथा संगीत विषय विद्यार्थियों को सिखाने के लिये प्रोत्साहन दिया।संगीत ि"ाक्षा को पर्याप्त महत्व न दिया जाना चिंता का विषय है, इस विषय में ''के"ाव चन्द्र वर्मा'' का कथन उल्लखनीय है'' संगीत को जीवन में एक बुनियादी साधना के रूप उतारना क्यों जरुरी है इसे न तो अभिभावक समझते हैं और न ही बच्चों को समझा पाते हैं, संगीत के इस ज्ञान से अछूते रह जाने के कारण जिन्दगी में प्रायः लयात्मकता का आभाव खटकता रहता है।'' प्रस्तुत दृष्टांत से जीवन में संगीत की महत्ता का प्रमाणीकरण होता है।

संगीत एक कसरत भी है जिससे हमारा शरीर और मन दोनों प्रसन्न रह सकते हैं, कंठ संगीत, वाद्य संगीत और नृत्य का अभ्यास हमारे शारिरिक स्वास्थ पर अच्छा प्रभाव डालता है। गायन के अभ्यास में हम सहज रूप से प्राणायाम की क्रिया ही करते हैं अतः जीवन के विभिन्न अंगों पर विचार करने पर हम पाते हैं कि संगीत मानव जीवन के लिये अत्यंत उपयोगी कला है।

डॉ॰ महे"ा नारायण सक्सेना संगीत के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करते हुये कहते हैं ''संगीत एक उच्च ललित कला है, जो संस्कृति का एक प्रमुख अंग है। राष्ट्रीय चेतना की प्रतिष्ठा में उसका असंदिग्ध योगदान है, वि"व भाषा होने के नाते संगीत राष्ट्र की भावात्मक एकता की स्थापना में तो महत्वपूर्ण भूमिका निभाता ही है तथा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर

भी वह वि"व परिवार की भावना का प्रबल पोषक तत्व है। अतः किसी न किसी रूप में और किसी न किसी सीमा तक दे"ा के प्रत्येक बच्चे और नागरिक को संगीत की ि"ाक्षा दी जानी बहुत आव"यक है।**12**

संगीत की भाषा साधारण या बोलचाल की नहीं है, वह तो आत्मा की मात्र–भाषा है जो अपनी स"ाक्त संकेतात्मक ध्वनि द्वारा आरुप को रूपायमान करने की क्षमता रखती है। सांकेतिक ध्वनियों से सम्बन्धित होने के कारण वह जीवन के समूचे भीतरी व बाहरी प्रवे"ा अनुनाद व लय का संचार करती है। शब्द रहित स"ाक्त घ्वनि व्यक्ति वि"ाष से जुड़कर जो देती है वह नि"चय ही समाज के लिये कल्याणकारी है। कला समाज की अनुगामी भी है और समाज का दर्पण भी है।

संदर्भ सूची

1. वि"व संगीत अंक, संगीत 1985, मुख पृष्ठ
2. महावीर प्रसाद मुके"ा, गंर्धव विवेचन, पृ011
3. उमे"ा जो"ाी, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ0 500
4. डॉ॰ अरुण कुमार सेन, भारतीय तालो का शास्त्रीय विवेचन, पृ0 106
5. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, कला की आधुनिक प्रवृत्तियाँ, पृ0 4
6. के॰ वासुदेव शास्त्री, संगीत शास्त्र, पृ0 2
7. हर्बट ए॰ पोपले, द म्यूजिक ऑफ इंडिया, पृ0 134
8. भगवत् शरण शर्मा, संगीत निबन्ध मंजरी, पृ0 30
9. उमे"ा जो"ाी, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ0 71
10. उमे"ा जो"ाी, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ0 81
11. संगीत (मासिक), अगस्त 1977, पृ0 15
12. डॉ॰ महे"ा नारायण सक्सेना, गन्र्धव पत्रिका 1774